## पन्थ पैंड़ों की खेंचा खेंच

**कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान।**
**कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमोन।। १ ।।**

यहां कोई दान को, कोई ज्ञान को, कोई विज्ञान को बड़ा कहता है और अटकल लगाकर लड़ते रहते हैं।

**कोई केहेवे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।**
**कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।। २ ।।**

कोई कर्म को, कोई काल को तथा कोई साधन को बड़ा कहकर झूठ में लड़ते रहते हैं।

**कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।**
**कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।। ३ ।।**

कोई तीरथ को, कोई तप को, कोई शील को और कोई सत (सत्य) को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।**
**कोई कहे मत बड़ी, या विध कई जुगत।। ४ ।।**

कोई विचार को, कोई व्रत को, कोई बुद्धि को तथा कोई युक्ति को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।**
**कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।। ५ ।।**

कोई करनी को, कोई भाव को, कोई मुक्ति को, कोई भक्त को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे श्रवन।**
**कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन।। ६ ।।**

कोई कीर्तन को, कोई श्रवण को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।**
**कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।। ७ ।।**

कोई ध्यान को, कोई धारणा को, कोई सेवा को, कोई अर्पण को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास।**
**कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास।। ८ ।।**

कोई संगति को, कोई दास को, कोई विवेक को, कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस।**
**कोई केहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस।। ९ ।।**

कोई शान्ति को, कोई तामस को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा कहकर बेबस होकर खेलते हैं।

**कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन।**
**कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान।। १० ।।**

कोई सदाशिव को, कोई आदि नारायण को, कोई आदि माता को बड़ा कहकर आपस में खींचा तानी करते हैं।

Nijanand App

**कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम।**
**कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन।। ११ ।।**

कोई आत्मा को, कोई परआतम (परात्म) को, कोई अहंकार को जो शुरू से ही पैंदा है, बड़ा कहते हैं।

**कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रह्म।**
**कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम।। १२ ।।**

कोई कहता है कि ब्रह्म सब में व्यापक है। कोई कहता है हमने ब्रह्म को पा लिया। कोई कहता है हमने नहीं पाया। इस तरह से संशय में डूबे हुए लड़ते हैं।

**कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।**
**कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।। १३ ।।**

कोई शून्य को, कोई निरंजन को, कोई निर्गुण को बड़ा कहकर वेद के वचनों से लड़ते हैं।

**कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।**
**कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार।। १४ ।।**

कोई आकार को, कोई निराकार को तथा कोई तेज को बड़ा कहकर संशय में लड़ते हैं।

**कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम।**
**यों वेद के वाद अंधकारें, करें लड़ाई धरम।। १५ ।।**

कोई परब्रह्म को, कोई पुरुषोतम को बड़ा कहते हैं तथा अन्धकार में वेदों पर वाद-विवाद कर धर्म के लिए लड़ाई करते हैं।

**जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर।**
**कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर।। १६ ।।**

यह सब जाहिरी में झूठ है। इनके हृदय संशय से भरे हैं। वह कहते हैं कि हम ही सच्चे हैं। बाकी सब झूठे हैं। इस तरह से उलटे चक्कर में पड़े हैं।

**पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट।**
**ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट।। १७ ।।**

सारे पंथों की यही हालत है। वैराट में अनेक तरह की यही मंजिल है। यह जो खेल की हकीकत बताई, वह सब माया की ठाट-बाट है।

**कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत ले।**
**खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह।। १८ ।।**

कोई बर्फ में गलते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई भैरव में झांप खाते हैं और कई काशी में जाकर करवट लेते हैं। इस तरह से अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करते हैं, परन्तु परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

**भेख जुदे जुदे खेल हीं, जाने खेल अखंड।**
**ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड।। १९ ।।**

तरह-तरह के भेष बनाकर खेलते हैं और उस खेल को अखण्ड समझते हैं, जबकि यह सब जो दिख रहा है मिटने वाला संसार है। यह बिना जड़ के खड़ा है।

Nijanand App

**खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।**
**ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २० ।।**

धनी सबका एक है। दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है जो स्वयं सच्चा हो।

**खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।**
**उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २१ ।।**

यह सब बेसुधी में खेल खेलते बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

**बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।**
**सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २२ ।।**

इस तरह यहां पर बिना दीवाल के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है, वह परब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

**अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।**
**ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर।। २३ ।।**

यहां पर अनेक प्रकार के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल, कभी अचल कहा है। ये सब छल के मोहरे हैं और इसी छल को सत्य मानकर खेलते हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

## वैराट का कोहेड़ा

**वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास।**
**डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। १ ।।**

इस वैराट का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

**फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल।**
**वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। २ ।।**

इसकी फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं। नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

**विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।**
**गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख।। ३ ।।**

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से हुई है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की युक्ति से जाली गुंथी है जिसमें सभी दुःख-सुख अनुभव करते हैं।

**कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।**
**जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद।। ४ ।।**

एक वैराट और वेद की दो तरह की धुन्ध जाली में ही जीव बंधे हैं। पर इस छल को कोई जानता नहीं।

Nijanand App